

29. गुरु रामदास जी की उदारता

एक बार गुरु रामदास अपने शिष्यों के साथ यात्रा कर रहे थे। रास्ते में बहुत से गन्नों के खेत थे। गुरु रामदास एक जलाशय पर आराम करने रुके। कुछ शिष्यों ने आँख बचाकर खेत से गन्ने तोड़ लिए और चूसने लगे। अचानक खेत का मालिक वहाँ आ धमका। उसने चूसे हुए गन्ने का ढेर देखा तो बहुत क्रोधित हुआ। वह चोरों के पीछे दौड़ा। उसने देखा एक सरोवर के पास एक साधु बैठा है। चोर दूर भाग गये थे। खेत के मालिक ने उस सन्त को ही चोर समझ लिया। उसने उसे पकड़ कर खूब पीटा। गुरु रामदास को काफी चोटें आईं।

शिवाजी सन्त रामदास को गुरु का सम्मान देते थे। जब उन्हें यह पता चला तो उन्होंने खेत के मालिक को पकड़ कर कारागार में डाल दिया। गुरु रामदास को जब पता चला तो उन्होंने शिवाजी से कहा—“शिवाजी, इस खेत के मालिक को छोड़ दो।”

“क्यों महाराज ?” शिवाजी ने पूछा।

रामदास ने उत्तर दिया—“यह इसीलिए कि किसान ने अपने अधिकार की रक्षा की है। चोरी तो हमारे शिष्यों ने की है, सज़ा उन्हें मिलनी चाहिए थी।”

शिवाजी ने किसान को मुक्त कर उसे पुनः जमीन प्रदान की और इसके साथ ही गुरु रामदास को एक सहस्र स्वर्ण मुद्राएं भेंट की।

“मैं सन्यासी हूँ, यह धन लेकर मैं क्या करूँगा ?” गुरु रामदास ने कहा।

“गुरुदेव, आप महान् हैं, आप में असीम क्षमा और प्रेम है। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?” शिवाजी ने कहा।

“प्रिय शिवा, यदि तुम ऐसा सोचते हो तो राज्य इस तरह चलाओ कि कोई भी प्राणी दुःखी और भूखा न रहे। अपना स्वार्थ छोड़कर प्रजा की सेवा करो और सन्यास तथा त्याग के गुणों को प्रकट करने के लिए अपने राष्ट्र का भगवा झण्डा बनवा लो।” गुरु रामदास ने कहा।

शिवाजी ने गुरु की शिक्षा को जीवन भर माना और प्रजा में बहुत प्रिय हुए।

* अभ्यास *

1. गुरु रामदास को खेत के मालिक ने क्यों पीटा ?
2. शिवाजी ने खेत के मालिक को जेल में क्यों डाल दिया ?
3. गुरु रामदास ने शिवाजी को क्या शिक्षा दी ?
4. क्षमा-भाव से व्यक्ति को क्या प्राप्त होता है ?

